E-ISSN: 2583-9667
Indexed Journal
Peer Reviewed Journal
https://multiresearchjournal.theviews.in

Received: 06-11-2025
Accepted: 17-12-2025
Published: 20-01-2026

INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCE RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY

Volume 4; Issue 1; 2026; Page No. 16-21

कर्नाटक में श्रेणी के अनुसार आयोजित उद्योगिनी लाभार्थियों पर शोध करने के उद्देश्य से

[1]सरला माथनकर, [2]राम सिंह कुशवाहा, [3]भानु साहू

अर्थशास्त्र विभाग, मध्यांचल प्रोफेशनल यूनिवर्सिटी, भोपाल, मध्य प्रदेश, भारत

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.18335751

Corresponding Author: सरला माथनकर

सारांश

उद्योगिनी योजना, जिसे 1997 में लॉन्च किया गया था, कर्नाटक राज्य महिला विकास निगम (KSWDC) द्वारा चलाई जा रही महिलाओं के सशक्तिकरण की कई पहलों में से एक है। अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति, अल्पसंख्यक, विधवाएं, दिव्यांग लोग और परेशान महिलाएं उद्योगिनी योजना के लक्षित लाभार्थी हैं। इस रिसर्च के अनुसार, जिसने योजना के तहत मिले फायदों का आकलन किया, उद्योगिनी योजना अपने प्रतिभागियों के लिए फायदेमंद रही है। "उद्योगिनी" का शाब्दिक अर्थ है एक महिला उद्यमी। ऑक्सफोर्ड इंग्लिश डिक्शनरी के अनुसार उद्यमिता की एक परिभाषा है "लाभ की उम्मीद में वित्तीय जोखिम उठाते हुए एक या एक से ज़्यादा व्यवसाय शुरू करने की गतिविधि।" इस रिसर्च का उद्देश्य यह पता लगाना है कि उद्योगिनी पहल ने कर्नाटक की नगर पालिकाओं में महिलाओं को कितना सशक्त बनाया है। ऊपर बताए गए समूहों - अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति, दिव्यांग लोग, अल्पसंख्यक, विधवाएं और अन्य - के लोगों को उद्योगिनी लाभ पाने के लिए चुना जाता है। संबंधित प्रचार संगठनों, जैसे KSWDC और ज़िला और तालुका स्तर पर इसकी शाखाओं को उद्योगिनी पहल में इस प्रगति के अंतर को पाटने के लिए सुधारात्मक कार्रवाई करने की ज़रूरत है।

मूल शब्दः कर्नाटक, उद्योगिनी, महिलाओं, भारत और शोध

प्रस्तावना

2011 की जनगणना के अनुसार, कर्नाटक राज्य की कुल आबादी में महिलाओं की संख्या 49.31% है। भारत के सभी दक्षिणी राज्यों में महिलाओं की आबादी का प्रतिशत लगभग समान है। हालांकि, कुल आबादी में अनुसूचित जाति (SC) की महिलाओं का प्रतिशत कर्नाटक (8.53%) की तुलना में तमिलनाडु (10.03%) में ज़्यादा है, जबकि पूरे भारत के लिए यह 8.08% है। कुल आबादी में अनुसूचित जनजाति (ST) की महिलाओं का प्रतिशत अन्य दक्षिणी राज्यों की तुलना में आंध्र प्रदेश (3.49%) में ज़्यादा है। हाल के वर्षों में ही महिलाओं के सशक्तिकरण का मुद्दा एक विकास लक्ष्य के रूप में मुख्य केंद्र में आया है। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए, कर्नाटक सरकार के महिला एवं बाल विकास विभाग (DWCD) ने कई योजनाएँ बनाई हैं जिनका उद्देश्य न केवल महिलाओं को सशक्त बनाना है, बल्कि विभिन्न क्षेत्रों में उनके कल्याण की दिशा में भी काम करना है। यह कर्नाटक महिला अभिवृद्धि योजना (KMAY) के माध्यम से किया जाता है।

कर्नाटक राज्य महिला विकास निगम (KSWDC) की स्थापना वर्ष 1987 में कंपनी पंजीकरण अधिनियम, 1956 के तहत की गई थी। यह एक लिमिटेड कंपनी है जिसके शेयर कंपनी अधिनियम, 1956 के तहत शामिल हैं। KSWDC के मुख्य उद्देश्यों में से एक महिलाओं के समूहों और समाज के कमजोर वर्ग की महिलाओं के बीच स्थायी आय सृजन गतिविधियों के लिए योजनाओं को बढ़ावा देना है। विधवाओं, बेसहारा और विकलांग महिलाओं को प्राथमिकता दी जाती है। उद्योगिनी KSWDC की एक प्रमुख योजना है, जिसे वर्ष 1997-98 में कर्नाटक सरकार के आदेश संख्या 97, दिनांक 03.09.1997 के तहत शुरू किया गया था और यह आज तक लागू है। इस योजना के तहत, महिलाओं को स्वरोजगार के माध्यम से, विशेष रूप से व्यापार और सेवा क्षेत्र के माध्यम से, आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनने में मदद करने के लिए ऋण (जिसमें KSWDC द्वारा वहन की जाने वाली सब्सिडी का एक हिस्सा शामिल है) दिया जाता है।

"उद्योगिनी" का मूल रूप से मतलब है एक महिला उद्यमी।

ऑक्सफ़ोर्ड डिक्शनरी एंटरप्रेन्योरशिप को "लाभ की उम्मीद में वित्तीय जोखिम उठाते हुए एक या ज़्यादा बिज़नेस शुरू करने की गतिविधि" के रूप में बताती है। इसी तरह, एक उद्यमी "एक ऐसा व्यक्ति होता है जो लाभ की उम्मीद में वित्तीय जोखिम उठाते हुए एक या ज़्यादा बिज़नेस शुरू करता है"। "उद्यमी" शब्द को अक्सर "छोटे बिज़नेस" शब्द के साथ भ्रमित किया जाता है या इस शब्द के साथ एक-दूसरे की जगह इस्तेमाल किया जाता है। हालांकि ज़्यादातर उद्यमी उद्यम एक छोटे बिज़नेस के रूप में शुरू होते हैं, लेकिन सभी छोटे बिज़नेस शब्द के सख़्त अर्थों में उद्यमी नहीं होते हैं। कई छोटे बिज़नेस अकेले मालिक द्वारा चलाए जाते हैं, जिसमें केवल मालिक होता है, या उनके पास कम संख्या में कर्मचारी होते हैं, और इनमें से कई छोटे बिज़नेस मौजूदा प्रोडक्ट, प्रोसेस या सर्विस देते हैं, और उनका लक्ष्य विकास करना नहीं होता है। इसके विपरीत, उद्यमी उद्यम एक इनोवेटिव प्रोडक्ट, प्रोसेस या सर्विस देते हैं, और उद्यमी आमतौर पर कर्मचारियों को जोड़कर, अंतर्राष्ट्रीय बिक्री की तलाश करके, और इसी तरह कंपनी को बड़ा करने का लक्ष्य रखता है, एक ऐसी प्रक्रिया जिसे वेंचर कैपिटल और एंजेल इन्वेस्टमेंट द्वारा फाइनेंस किया जाता है। सफल उद्यमियों में उचित योजना बनाकर बिज़नेस को सही दिशा में ले जाने, बदलते माहौल के अनुकूल ढलने और अपनी ताक़त और कमज़ोरी को समझने की क्षमता होती है ।

साहित्य समीक्षा

रफ़ी, डुडेकुला एट अल. (2021) [1]. भारत में महिलाएँ मूलभूत अग्रणी कार्यबलों में से एक हैं जो अर्थव्यवस्था में प्रमुख भूमिका निभाती हैं। महिलाएँ जन्मजात नेता होती हैं, लेकिन उनमें से अधिकांश घरेलू गतिविधियों तक ही सीमित रहती हैं और उन्हें कई कठिनाइयों और कष्टों का सामना करना पड़ता है। भारत में, लगभग 50% मानव जनसंख्या महिलाएँ हैं और कुल महिला जनसंख्या का लगभग 75% ग्रामीण क्षेत्रों से है। एक समतावादी समाज के निर्माण के लिए सामाजिक और आर्थिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में महिला सशक्तिकरण अनिवार्य है। वर्तमान अध्ययन आंध्र प्रदेश के रायलसीमा क्षेत्र में स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से महिला सशक्तिकरण पर केंद्रित था। स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से महिला सशक्तिकरण के कथित स्तर की पहचान करने के लिए 120 स्वयं सहायता समूह समूहों के 360 उत्तरदाताओं का कुल प्रतिनिधि नमूना लिया गया था। उत्तरदाताओं के चयन के लिए उद्देश्यपूर्ण सह यादृच्छिक नमूनाकरण का उपयोग किया गया था। सदस्यों के सशक्तिकरण स्तरों की पहचान के लिए प्रत्यक्ष सशक्तिकरण सूचकांक का उपयोग किया गया था। अध्ययन का निष्कर्ष है कि अधिकांश एसएचजी उत्तरदाताओं ने एसएचजी के माध्यम से समग्र सशक्तिकरण के मध्यम स्तर को महसूस किया।

सिहाग, रिजुल एट अल. (2022) [2]. स्वयं सहायता समूहों (एसएचजी) की अवधारणा महिलाओं के आर्थिक सशक्तीकरण के लिए एक सहायक साधन है। चूंकि हरियाणा भारत के विकसित राज्यों में से एक है, हालांकि, भारत के कुल एसएचजी में हरियाणा के एसएचजी की वृद्धि और हिस्सेदारी बहुत मामूली है। महिलाओं का सशक्तीकरण एक राष्ट्र के आर्थिक विकास के लिए महत्वपूर्ण है और परिवर्तन के लिए आधार बनाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है । यह आय उत्पन्न करता है और गृहणियों की जरूरतों के अनुसार लचीले काम के घंटे भी प्रदान करता है। स्वयं सहायता समूहों की उद्यमशीलता गतिविधियों के माध्यम से महिलाओं के सशक्तीकरण का अध्ययन करने के लिए, वर्ष 2015-16 में यह विशेष शोध आय सृजन गतिविधियों की पहचान करने और हरियाणा में बाबा साहेब अम्बेडकर हस्त शिल्प योजना (एएचवीवाई) के तहत सक्रिय रूप से काम कर रहे एसएचजी की प्रभावशीलता की जांच करने के विशिष्ट उद्देश्य से किया गया था। साथ ही, महिलाओं द्वारा सामना की जाने वाली आर्थिक बाधाओं का विश्लेषण करना। परिणाम ने एसएचजी में शामिल होने के बाद आय, रोजगार और बचत के संदर्भ में संकेतकों में सकारात्मक बदलाव दिखाया। इस प्रकार अध्ययन से यह निष्कर्ष निकला कि अध्ययन क्षेत्र में ग्रामीण महिलाओं के सशक्तिकरण में स्वयं सहायता समूह महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

सेनापति, असिस एट अल. (2019) [3]. सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम देश में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं जो महिला सशक्तिकरण में योगदान दे सकते हैं और उन्हें रोजगार के अवसर प्रदान कर सकते हैं। यह महिलाओं की आर्थिक स्थिति को सुधारने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, जो उच्च योग्यता प्राप्त और कम योग्यता प्राप्त महिलाओं को उनके समग्र विकास के लिए रोजगार प्रदान करता है और कृषि क्षेत्र में रोजगार स्थिर होने पर गैर-कृषि क्षेत्र में संलग्न होने की उनकी अंतर्निहित क्षमता को पहचानने में मदद करता है। वर्तमान अध्ययन उद्यमिता के माध्यम से महिलाओं के सामाजिक-आर्थिक सशक्तिकरण का आकलन करने और उद्यम प्रबंधन में उनके सामने आने वाली कई समस्याओं की पहचान करने का प्रयास करता है। अध्ययन के उद्देश्य से कुल 100 नमूनों का सर्वेक्षण किया गया। 30 पंजीकृत उद्यमियों से डेटा एकत्र करने के लिए सरल यादृच्छिक नमूनाकरण का उपयोग किया गया है। स्नोबॉल नमूनाकरण के माध्यम से, क्षेत्र में 70 अपंजीकृत उद्यमियों का साक्षात्कार लिया गया। प्रत्यक्ष साक्षात्कार पद्धति का उपयोग करके एक संरचित प्रश्नावली के माध्यम से मात्रात्मक और गुणात्मक दोनों डेटा एकत्र किए गए हैं। सशक्तिकरण के निर्धारकों का पता लगाने के लिए ओएलएस प्रतिगमन और आदेशित लॉजिस्टिक प्रतिगमन मॉडल का उपयोग किया गया है। पुनः, उद्यमियों को आरंभिक और वर्तमान प्रबंधन के दौरान सामना की जाने वाली विभिन्न बाधाओं का पता लगाया गया है। प्रमुख आर्थिक चर आय, व्यय और उद्यम संबंधी निर्णय लेने की क्षमता हैं, जिनसे आर्थिक सशक्तिकरण स्कोर में वृद्धि होने की संभावना है।

गिरि, प्रमोद एट अल. (2021) [4]. महिलाएँ न केवल आर्थिक और सामाजिक गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग ले रही हैं, बल्कि वे राजनीतिक क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं, लेकिन पुरुष-प्रधान समाज उनके प्रयासों की कभी सराहना नहीं करता, उन्हें आज भी सामाजिक, आर्थिक और शैक्षणिक क्षेत्र में भेदभाव का सामना करना पड़ता है। महिलाएँ न केवल अपने परिवार का प्रबंधन कर रही हैं, बल्कि पूरे समाज के विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। मुख्य मुद्दा महिलाओं को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक करना और उनमें आत्मविश्वास विकसित करना है। महिला सशक्तिकरण का मूल साधन उन्हें अपनी इच्छानुसार जीवन जीने की शक्ति और स्वतंत्रता देना है। उन्हें अपनी क्षमताओं को पहचानने और अपने जीवन में निर्णय लेने में सक्षम बनाने की अनुमति देता है। यह महिलाओं के लिए एक गतिशील और विकास प्रक्रिया है जिसमें जागरूकता, प्राप्ति और कौशल का वास्तविकीकरण शामिल है। किसी भी समाज के सामाजिक-आर्थिक विकास के लिए महिला सशक्तिकरण आवश्यक आयामों में से एक है। महिला सशक्तिकरण एक विकसित समाज का सूचक है। महिलाओं को आत्मविश्वास और सम्मान के साथ अपनी

पहचान बनाने की आवश्यकता है। सशक्तिकरण का केंद्रीय पहलू उन्हें आंतरिक शक्ति का एहसास दिलाना है - अपने जीवन को नियंत्रित करने की क्षमता।

शाह, नसरीन एट अल. (2020) [5]. यह अध्ययन महिलाओं की बुनियादी ज़रूरतों पर प्रकाश डालता है - घर के अंदर अवैतनिक पारिवारिक काम, आय-उत्पादक काम में सबसे निचले पायदान पर रहने वाली मज़दूरी और देखभाल करने वाली। यहाँ कुछ सवाल मन में आ सकते हैं कि काम, रोज़मर्रा के काम, वर्ग और भूमिका के प्रति महिलाओं की संवेदनशीलता कितनी है? विभिन्न भूमिकाओं के बोझ तले दबी होने के बावजूद वे खुद को कैसे अलग करती हैं? या क्या पितृसत्तात्मक व्यवस्था उन्हें और भी ज़्यादा हतोत्साहित करती है? व्यवसायों का यह सम्मिश्रण कैसे संभव हुआ है? यह अध्ययन इन सवालों के जवाब तलाशने वाले क्षेत्रीय शोध को दर्शाता है। इस शोध के लिए तैयार किए गए साक्षात्कार कार्यक्रम में ऐसे प्रश्न शामिल थे जिनका उद्देश्य उत्तरदाताओं के बारे में व्यक्तिगत जानकारी प्राप्त करना था, जैसे कि उम्र, शैक्षिक योग्यता, वैवाहिक स्थिति, बच्चों की संख्या, काम का प्रकार, आदि। नमूने से प्राप्त आँकड़े स्व-नियोजित कामकाजी महिलाओं की आय-उत्पादक काम और खाना पकाने, सफाई, देखभाल, पालन-पोषण और अन्य घरेलू कामों जैसी सामुदायिक भूमिकाओं के बीच संतुलन बनाने की क्षमता को दर्शाते हैं। इसलिए, यह शोध जिस दृष्टिकोण की पड़ताल करता है, वह महिलाओं को पुरुषों की ज़िम्मेदारी मानने की कल्पित विशेषताओं को नकारता है। आमंत्रित करता है।

अनुसंधान पद्धति

यह कर्नाटक नगरपालिका में महिला सशक्तिकरण की उद्योगिनी योजना की प्रभावशीलता के आकलन पर आधारित होगा। ये 100 महिलाएँ यादृच्छिक प्रतिचयन विधि का उपयोग करके यह मानकर चयन करेंगी कि उद्योगिनी योजना की प्रभावशीलता ज्ञात है।

डेटा विश्लेषण

यह योजना 2020-21 के दौरान शुरू की गई थी। इस योजना के तहत महिला उद्यमी छोटे और मध्यम उद्योगों और सेवा क्षेत्रों को शुरू करने के लिए कर्नाटक राज्य वित्तीय निगम (KSFC) से 5.00 लाख रुपये से 50.00 लाख रुपये तक का ऋण प्राप्त करने के लिए पात्र हैं, जिसकी ब्याज दर 14% है। जिसमें से 10% ब्याज का भुगतान कर्नाटक राज्य महिला विकास निगम द्वारा किया जाएगा। यह 10% ब्याज राशि KSFC द्वारा ऋण स्वीकृत होने के 5 साल बाद तक चुकाई जाएगी। मूल राशि चुकाने के लिए 12 महीने की अवकाश अवधि तय की गई है। लाभार्थी द्वारा भुगतान किए गए ब्याज भाग के 4% के बाद KSWDC का ब्याज हिस्सा समायोजित किया जाएगा। ब्याज सब्सिडी ऋण की मंजूरी की तारीख से 5 साल की कुल अवधि के लिए लागू होगी।

तालिका 1: महिला उद्यमियों के लिए इंटरनेट सब्सिडी योजना (आईएसएसडब्ल्यूई) के लिए बजट आवंटन

वर्ष	भौतिक (सं.)		वित्तीय (लाखों रुपये में)	
	लक्ष्य	उपलब्धि	लक्ष्य	उपलब्धि
2020-21	0	168	0	35.62
2021-22	0	357	180.00	180.00
2022-23	406	320	850.00	425.00
2023-24	0	771	3294.00	1647.00
कुल	406.00	1616.00	4324.00	2287.62
सीएजीआर	-	46.36%	-	160.77%
अर्थ	101.5000	404.0000	1081.0000	571.9050
एसडी	203.00000	257.97287	1519.98816	734.52966
सीवी	2.00	0.639	1.406	1.284

स्रोत: कर्नाटक सरकार (2018), आर्थिक सर्वेक्षण 2023-24 (बेंगलुरु: योजना कार्यक्रम निगरानी और सांख्यिकी विभाग विभिन्न खंड) ।

उद्योगिनी लाभार्थियों का चयन अनुसूचित जातियों/अनुसूचित जनजातियों, दिव्यांगजनों, अल्पसंख्यकों, विधवाओं और अन्य की उपरोक्त विश्लेषित श्रेणियों से किया जाता है। उपर्युक्त मानदंडों के आधार पर राज्य में उद्योगिनी लाभार्थियों का चयन किया जाता है। वित्तीय वर्ष 2021-22 के अंत तक राज्य में उद्योगिनी लाभार्थियों की संख्या 88644 है। तालिका 1 में 2002-03 से 2020-21 तक कर्नाटक के उद्योगिनी लाभार्थियों के वर्गीकरण (संचयी योग) के आँकड़े दिए गए हैं।

तालिका 2: कर्नाटक के उद्योगिनी लाभार्थियों का 2002-03 से 2020-21 तक वर्गीकरण (संचयी योग)

क्रम. नहीं।	वर्ग	की संख्या लाभार्थियों	को Percentage	श्रेणी
1	अनुसूचित जाति	26323	29.69	2
2	अनुसूचित जनजातियाँ	6248	7.04	4
3	शारीरिक रूप से विकलांग	1397	1.57	6
4	विधवाओं	3510	3.95	5
5	अल्पसंख्यकों	6529	7.36	3
6	अन्य	44637	50.35	1
	कुल	88644	100.00	

स्रोत: महिला एवं बाल कल्याण निदेशालय, कर्नाटक सरकार के अभिलेख।

लाभार्थियों की सबसे अधिक संख्या 'अन्य' श्रेणी (44637) से संबंधित है, जो कुल लाभार्थियों का 50.35 प्रतिशत है। इसके बाद सबसे अधिक लाभार्थी अनुसूचित जाति (26323) से संबंधित हैं, जो कुल लाभार्थियों का 29.69 प्रतिशत है। इसके बाद अल्पसंख्यक (7.36%), अनुसूचित जनजाति (7.04%), विधवाएँ (3.95%), और शारीरिक रूप से विकलांग व्यक्ति (1.57%) आते हैं।

कर्नाटक के उद्योगिनी लाभार्थियों की 20 वर्ष-वार वृद्धि

केएसडब्ल्यूडीसी राज्य में उद्योगिनी लाभार्थियों की वर्ष-वार वृद्धि के आँकड़े रखता है। उपरोक्त तालिका-3 वर्ष 1997-78 से 2020-21 के दौरान कर्नाटक में उद्योगिनी योजना के भौतिक लक्ष्य और उपलब्धि को दर्शाती है।

तालिका 3: कर्नाटक में उद्योगिनी लाभार्थी योजना (अवधि: 1997-78 से 2020-21)

वर्ष	भौतिक लक्ष्य	एजीआर	उपलब्धियों	एजीआर	लक्ष्य प्राप्ति को Percentage
1997-98	240	-	216	-	90
1998-99	400	66.7	307	42.1	76
1999-00	400	0.0	436	42.0	109
2000-01	590	47.5	500	14.7	84
2001-02	500	-15.3	590	18.0	118
2002-03	675	35.0	851	44.2	126
2003-04	1726	155.7	1827	114.7	106
2004-05	2112	22.4	2215	21.2	105
2005-06	1542	-27.0	1635	-26.2	106
2006-07	1234	-20.0	1205	-26.3	98
2007-08	1513	22.6	1641	36.2	108
2013-14	5613	271.0	4397	167.9	78
2014-15	5563	-0.9	5530	25.8	99
2015-16	9600	72.6	7910	43.0	83
2016-17	15518	61.6	14488	83.2	94
2017-18	9332	-39.9	9742	-32.8	105
2018-19	10500	12.5	2630	-73.0	25
2019-20	11598	10.5	5035	91.4	43
2020-21	15000	29.3	9057	79.9	61
कुल	93656		70212		
सीएजीआर	27.1		22.6		
युग्मित टी-परीक्षण	टी-मान: 2.109, डीएफ: 18, सिग: 0.049				

स्रोत: महिला एवं बाल कल्याण निदेशालय, कर्नाटक सरकार के अभिलेख

कर्नाटक में उद्योगिनी लाभार्थी योजना के भौतिक लक्ष्य और उपलब्धियाँ उपरोक्त तालिका में प्रस्तुत की गई हैं। भौतिक लक्ष्यों और उपलब्धियों में सकारात्मक वृद्धि हुई है। लक्ष्यों की वृद्धि, उपलब्धियों की तुलना में अधिक है। साथ ही, युग्मित टी-परीक्षण से यह सिद्ध होता है कि लक्ष्यों की तुलना में भौतिक उपलब्धियाँ कम हैं। तदनुसार, कार्यक्रम अपने निर्धारित भौतिक लक्ष्य तक नहीं पहुँच पाया है।

कर्नाटक सरकार ने उद्योगिनी लाभार्थियों की छह श्रेणियों की मदद के लिए भौतिक लक्ष्य तय किए हैं। तालिका-3 उद्योगिनी योजना के तहत लाभान्वित लाभार्थियों की संख्या का वर्षवार डेटा देती है। यह तालिका 19 वर्षों का डेटा देती है। 2002-03 के दौरान 126 प्रतिशत का उच्चतम लक्ष्य हासिल किया गया था। लक्ष्य की अगली उच्चतम उपलब्धि 2001-02 (118%) में देखी गई थी। इसके बाद क्रमशः 109 प्रतिशत, 108 प्रतिशत, 106 प्रतिशत, 105 प्रतिशत, 99 प्रतिशत, 98 प्रतिशत, 90 प्रतिशत, 84 प्रतिशत वर्ष 1999-2000, 2007-08, 2005-06, 2012-13, 2014-15, 2006-07, 1997-98 और 2000-01 के दौरान हासिल की गई।

तालिका 4: कर्नाटक में उद्योगिनी योजना के वर्षवार वित्तीय लक्ष्य और उपलब्धियां लाभार्थी (अवधि 1997-98 से 2020-21) (लाख रुपये में)

वर्ष	वित्तीय लक्ष्य	का मूल्य ग्रोथ फाइनेंशियल	उपलब्धियों	का मूल्य विकास उपलब्धि	उपलब्धि लक्ष्य का प्रतिशत
1997-98	45.00	-	26.55	-	59
1998-99	50.00	11.1	39.19	47.6	79
1999-00	50.00	0.0	52.89	35.0	106
2000-01	74.26	48.5	59.91	13.3	81
2001-02	60.00	-19.2	58.98	-1.6	98
2002-03	78.75	31.3	86.67	46.9	110
2003-04	100.00	27.0	96.68	11.5	97
2004-05	130.20	30.2	119.82	23.9	92
2005-06	125.05	-4.0	102.94	-14.1	82
2006-07	101.08	-19.2	82.47	-19.9	81
2007-08	122.68	21.4	118.64	43.9	97
2013-14	418.93	241.5	344.47	190.3	82
2014-15	495.00	18.2	460.50	33.7	93
2015-16	1000.00	102.0	821.05	78.3	82
2016-17	1500.00	50.0	1269.00	54.6	85
2017-18	835.00	-44.3	941.18	-25.8	113
2018-19	935.00	12.0	237.78	-74.7	25
2019-20	1030.00	10.2	295.00	24.1	28
2020-21	110.00	-89.3	825.00	179.7	750
कुल	7260.95		6038.72		
सीएजीआर	19.3		20.3		
युग्मित टी-परीक्षा	टी-मान: 0.951, डीएफ: 18, सिग: 0.354				

स्रोत: वार्षिक रिपोर्ट (1997-98 से 2020-21), महिला एवं बाल कल्याण निदेशालय, कर्नाटक सरकार के अभिलेख

कर्नाटक में उद्योगिनी लाभार्थी योजना के वित्तीय लक्ष्य और उपलब्धियाँ उपरोक्त तालिका में प्रस्तुत की गई हैं। भौतिक लक्ष्यों और उपलब्धियों में सकारात्मक वृद्धि देखी गई है। लक्ष्यों की वृद्धि लगभग उपलब्धियों के बराबर है। साथ ही, युग्मित टी-परीक्षण से यह पाया गया है कि वित्तीय उपलब्धियाँ लक्ष्यों की तुलना में सांख्यिकीय रूप से कम नहीं हैं। तदनुसार, कार्यक्रम ने संतोषजनक स्थिति में अपने वित्तीय लक्ष्यों को प्राप्त कर लिया है।

तालिका- 4 कर्नाटक में 1997-98 से 2020-21 की अवधि के दौरान उद्योगिनी योजना की वित्तीय उपलब्धि के आँकड़े देती है। कर्नाटक सरकार भौतिक लक्ष्य तय करने के अलावा, उद्योगिनी योजना के तहत वित्तीय लक्ष्य भी तय करती है। तालिका 4. उद्योगिनी लाभार्थियों के लिए वित्तीय लक्ष्य और उपलब्धियों के आँकड़े देती है, जैसा कि दूसरे; तीसरे स्थान पर 2020-21 में वित्तीय लक्ष्य की सर्वोच्च उपलब्धि देखी गई। इसके बाद वर्ष 2017-18, 2002-03, 1999-2000, 2001-02, 2003-04, 2014-15, 2004-05 के दौरान क्रमशः 113 प्रतिशत, 110 प्रतिशत, 106 प्रतिशत, 98 प्रतिशत, 97 प्रतिशत, 93 प्रतिशत, 92 प्रतिशत रहे। वर्ष 2000-01, 2005-06, 2006-07, 2013-14, 2016-17 के दौरान वित्तीय लक्ष्य की उपलब्धि 80 प्रतिशत से अधिक और 90 प्रतिशत से कम रही। सबसे कम उपलब्धि वर्ष 2019-20 के दौरान देखी गई।

तालिका 5: उद्योगिनी योजना अवधि 1997-08 से 2006-07 एवं अवधि 2007-08 से 2020-21 का जिलावार वितरण (भौतिक लक्ष्य एवं उपलब्धि)

क्रम संख्या	ज़िला	1997-08 से 2006-07 की अवधि				2007-08 से 2020-21 तक की अवधि			
		लक्ष्य	पाना ईमेंट	अचीवमी % में nt	श्रेणी	लक्ष्य	प्राप्त करना जाहिर	उपलब्धि की में	श्रेणी
1	बैंगलोर (ग्रामीण)	401	403	100.49	15	2560	3091	121	2
2	बैंगलोर (शहरी)	974	985	101.12	12	9218	8327	90.33	21
3	बेलगाम	709	774	109.16	3	6502	7151	109.98	5
4	बीजापुर	319	289	90.59	25	3071	2745	89.38	22
5	बागलकोट	284	287	101.05	14	2770	2797	100.97	10
6	बेल्लारी	362	274	75.69	27	3772	3664	97.13	17
7	बीदर	279	278	99.64	17	2629	2406	91.51	19
8	चामराजनगर	222	185	83.33	26	1510	1335	88.41	24
9	चित्रदुर्ग	265	284	107.16	5	2385	2173	91.11	20
10	चिकमंगलूर	279	288	103.22	10	1626	1635	100.55	11
11	चिकबलपुर	ना	ना	ना	ना	1741	1708	98.10	14
12	दावणगेरे	288	277	96.18	20	2637	2833	107.43	6
13	दक्षिण कन्नड़	297	286	96.29	19	2650	2320	87.54	25
14	धारवाड़	275	254	92.36	24	2579	2364	91.66	18
15	गडग	204	204	100	16	1658	1629	98.25	13
16	गुलबर्गा	603	564	93.53	23	40009	3572	89.09	23
17	हसन	296	436	147.29	1	2393	2473	103.34	9
18	हावेरी	246	256	104.06	8	2368	1966	83.02	29
19	कोलार	415	445	107.22	4	2333	2482	106.38	7
20	कोप्पला	218	208	95.41	21	1941	3042	156.72	1
21	कोडागू	114	121	106.14	7	773	875	113.19	3
22	मंड्या	308	329	106.81	6	2379	2364	99.36	12
23	मैसूर	446	434	97.30	18	4168	3377	81.02	30
24	रायचूर	306	313	102.28	11	3048	3400	111.54	4
25	रामनगर	ना	ना	ना	ना	1330	1390	104.54	8
26	शिमोगा	274	277	101.09	13	2350	2288	97.36	16
27	तुमकुर	405	385	95.06	22	3775	3692	97.80	15
28	उत्तर कन्नड़	201	208	103.48	9	1807	1577	87.27	26
29	उडुपी	207	245	118.35	2	1522	1317	86.53	28
30	यादगीर	ना	ना	ना	ना	1430	1241	86.78	27
युग्मित टी-परीक्षण		टी-मान: -0.451, डीएफ: 26, सिग: 0.655				टी-मान: 1.030, डीएफ: 26, सिग: 0.313			

स्रोत: महिला एवं बाल कल्याण निदेशालय, कर्नाटक सरकार के अभिलेख।

कर्नाटक में दो अलग-अलग अवधियों के लिए उद्योगिनी लाभार्थी योजना की भौतिक और वित्तीय उपलब्धियाँ ऊपर दी गई तालिका-5 में प्रस्तुत की गई हैं। 1997-98 से 2006-07 की अवधि के दौरान लक्ष्यों और उपलब्धियों के बीच का अंतर सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण नहीं है। यद्यपि जिला स्तर पर भिन्नताएँ हैं, फिर भी 1997-98 से 2006-07 की अवधि के दौरान भौतिक लक्ष्य प्राप्त किए गए हैं।

2007-08 से 2020-21 की अवधि के दौरान लक्ष्यों और उपलब्धियों के बीच का अंतर भी सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण नहीं है। यद्यपि जिला स्तर पर भिन्नताएँ हैं, फिर भी 2007-08 से 2020-21 की अवधि के दौरान भौतिक लक्ष्य प्राप्त किए गए हैं।

उद्योगिनी योजना राज्य के सभी 30 जिलों में कार्यान्वित की जाती है। तालिका- 5 में उद्योगिनी योजना के तहत लाभार्थियों का जिलेवार डेटा 1997-08 से 2020-21 की दो अवधियों के लिए दिया गया है। यह तालिका 1997-98 से 2006-07 की इस अवधि के दौरान प्रतिशत में उपलब्धि के आंकड़े भी प्रदान करती है। लक्ष्य की सर्वोच्च उपलब्धि हासन जिले (147.29%) में देखी गई है। लक्ष्य की अगली सर्वोच्च उपलब्धि उडुपी जिले (118.35%) में है। इसके बाद बेलगाम (109.16%), कोलार (107.22%), चित्रदुर्ग (107.16%), मंड्या (106.81%), कोडागु (106.14%), हावेरी (104.06%), उत्तर कन्नड़ (103.48%) और चिक्कमगलुर जिला (103.22%) का स्थान है।

यह तालिका 2007-08 से 2020-21 तक की अवधि के दौरान प्रतिशत में उपलब्धि के आँकड़े भी प्रदान करती है। लक्ष्य की सर्वाधिक उपलब्धि कोप्पला जिले (156.72%) में देखी गई है। लक्ष्य की अगली सर्वाधिक उपलब्धि बेंगलुरु (आर) (121%) में है। इसके बाद कोडागु (113.19%), रायचूर (111.54%), बेलगाम (109.98%), दावणगेरे (107.43%), कोलारा (106.78%), रामनगर (104.54%), हासन (103.34%) और बागलकोट (100.97%) जिले हैं। मैसूर जिले में लक्ष्य की उपलब्धि (81.02%) राज्य में सबसे कम है।

निष्कर्ष

KSWDC और ज़िला और तालुका लेवल पर उसकी ब्रांच जैसे संबंधित प्रमोशनल संगठनों को उद्योगिनी पहल में इस प्रोग्रेस गैप को खत्म करने के लिए ज़रूरी कदम उठाने की ज़रूरत है। इन

ज़रूरी कदमों में कमज़ोर सामाजिक ग्रुप की कम इनकम वाली महिलाओं को उद्योगिनी योजना के फायदों के बारे में सही जानकारी देना शामिल हो सकता है। काबिलियत उद्योगिनी पाने वालों के बिज़नेस की कोशिशों की सफलता की कुंजी है। उद्योगिनी योजना के लाभार्थी बिज़नेस मैनेजमेंट के क्षेत्रों में शिक्षा, ट्रेनिंग और री-ट्रेनिंग से यह काबिलियत हासिल कर सकते हैं। कर्नाटक राज्य महिला विकास निगम (KSWDC) द्वारा चलाई जा रही कई महिला सशक्तिकरण पहलों में से एक 1997 में शुरू की गई उद्योगिनी योजना है। "उद्योगिनी" शब्द का मतलब मूल रूप से एक महिला उद्यमी होता है। ऑक्सफ़ोर्ड इंग्लिश डिक्शनरी के अनुसार उद्यमिता की एक परिभाषा है "एक या ज़्यादा बिज़नेस शुरू करने की गतिविधि, मुनाफे की उम्मीद में वित्तीय जोखिम उठाना।"

संदर्भ

1. रफ़ी द, पलानीचामी एन, कुमार डी, वेलावन सी, आनंदी वी, धंदापानी म. आंध्र प्रदेश के रायलसीमा क्षेत्र में स्वयं सहायता समूहों (एसएचजी) के माध्यम से महिला सशक्तिकरण पर एक अध्ययन। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ बायोलॉजिकल साइंसेज. 2021;13:873-879.
2. सिहाग र, वर्मानी स. स्वयं सहायता समूह: भारत में ग्रामीण महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण के लिए एक दृष्टिकोण। एशियन जर्नल ऑफ एग्रीकल्चरल एक्सटेंशन, इकोनॉमिक्स एंड सोशियोलॉजी. 2022:107-113. doi:10.9734/ajaees/2022/v40i430878.
3. सेनापति अ, ओझा क. सूक्ष्म उद्यमिता के माध्यम से महिलाओं का सामाजिक-आर्थिक सशक्तिकरण: ओडिशा, भारत से साक्ष्य। अंतर्राष्ट्रीय ग्रामीण प्रबंधन जर्नल. 2019;15. doi:10.1177/0973005219866588.
4. गिरि प. महिलाओं का कौशल विकास और सामाजिक-आर्थिक सशक्तिकरण। 2021. doi:10.1729/जर्नल.26804.
5. शाह न, नदीमुल्लाह म, ज़िया म, सूमरो श. स्व-रोज़गार वाली महिलाएँ, महिला उद्यमी और कार्य। पाकिस्तान जर्नल ऑफ जेंडर स्टडीज़. 2020;8. doi:10.46568/pjgs.v8i1.340.
6. फ़ातिमा एच, परमासिवन सी, रविचंदिरन जी. महिला उद्यमिता के माध्यम से सतत महिला सशक्तिकरण। 2024.
7. अग्रवाल व, मैती स, साहू त. महिला उद्यमिता, रोजगारपरकता और सशक्तिकरण: मुद्रा ऋण योजना का प्रभाव। विकासात्मक उद्यमिता का जर्नल. 2022;27. doi:10.1142/S1084946722500054.
8. अहमद श. भारत में पुरुषों और महिलाओं में स्व-रोज़गार के कार्यान्वयन और विकास पर एक केस स्टडी। उद्यमिता और अंतर्राष्ट्रीय व्यापार पर तकनीकी लेनदेन जर्नल. 2022;1:1-5. doi:10.36647/TTEIB/01.01.Art001.
9. विद्यादेवी बी, शांति आर. आर्थिक विकास में महिला उद्यमी और भारत में उपलब्ध योजनाएँ। अंतर्राष्ट्रीय सामाजिक विज्ञान जर्नल. 2018;3:83-87.
10. चावला म, दासगुप्ता अ, अपराजिता. भारतीय महिलाओं का सशक्तिकरण: उद्यमिता के अवसर। 2021.
11. श्री व, स्कॉलर आर, शनमुगम व. भारत में महिला सशक्तिकरण और रोज़गार का वर्तमान युग। 2022.
12. गजेंद्र न, जट्टी ग. केरल राज्य में उद्यमिता विकास पर ग्रामीण स्वरोजगार प्रशिक्षण संस्थानों (आरएसईटीआई) का अध्ययन: महिला सशक्तिकरण के विशेष संदर्भ में। उद्यमिता एवं विकास अध्ययन जर्नल. 2024.
13. विनोदिनी आरएल, पंचनाथन व. ग्रामीण भारत में स्वयं सहायता समूह और महिलाओं का सामाजिक-आर्थिक सशक्तिकरण। भारतीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी जर्नल. 2016;9. doi:10.17485/ijst/2016/v9i27/97629.
14. विजयचंद्रिका सी. स्वयं सहायता समूह भारत में महिला सशक्तिकरण का एक तंत्र है। सामाजिक अनुसंधान जर्नल. 2020;2:26-29.
15. बोराह ज, बुरागोहेन र, चुटिया र, डेका द, राजबोंगशी अ, सैकिया द. ग्रामीण महिला उद्यमियों का सशक्तिकरण: भारत में सतत विकास हेतु एक रणनीतिक रोडमैप। 2025.

Creative Commons (CC) License
This article is an open access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY 4.0) license. This license permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited.